C-3 B.Ed. 1 Year (2019-2021)

उपचारात्मक शिक्षण का महत्व
Importance of Remedial Teaching

उपचारात्मक शिक्षण का निम्नलिखित महत्व है जो इस प्रकार है -

1- इससे छात्रों की कठिनाइयों का निराकरण होता है।
2- इससे छात्रो को विशेष शिक्षा प्राप्त होती है।
3- इसके प्रयोग से छात्र अन्य छात्रो के साथ अध्ययन कर पाते है
4- उपचारात्मक शिक्षण मे छात्रो को अपने विचारो को संगठित करने, व्याख्या करने व तुलना करने का अवसर प्राप्त होता है।
5- छात्रो की सभी कमजोरियो पर बल दिया जाता है।
6- छात्र अपने कार्य मे रुचि लेने लगते है।
7- छात्रो को इस प्रकार के शिक्षण मे समुचित अभिप्रेरणा प्रदान की जाती है।

उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ :- यदि बच्चे के व्यवहार में अपेक्षित सुधार नही है तो उसके लिए उपचारात्मक तथा निदानात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। उपचारात्मक शिक्षण मे हम निम्न विधियो का उपयोग कर सकते है :-

i. अभ्यास पुस्तिका या कार्य पुस्तिका का उपयोग करके
ii- दृश्य -श्रव्य सामग्री का उपयोग करके।
iii- सन्दर्भ पुस्तक या अन्य सामग्री का प्रयोग करके।
iv- पुरस्कार तथा प्रशंसा का उपयोग करके
v- सहपाठी अध्ययन समूह बनाकर
vi- वैकल्पिक शिक्षण विधि का प्रयोग करके।

उपचारात्मक शिक्षण हेतु कठिनाइयों का स्वरूप :- निदानात्मक परीक्षणो के परिणामो से ज्ञात कमजोरियो, समस्याओ एवं कठिनाइयो का स्वरूप निम्नलिखित हो सकता है :-

1- सामान्य कठिनाइयाँ
2- विशिष्ट कठिनाइयां
3- पूर्वज्ञान से असम्बन्धित कठिनाइया

Scanned with CamScanner

1- सामान्य कठिनाइयाँ और उसके निवारण हेतु उपाय—

— यदि कक्षा के अधिकांश छात्र शिक्षण अधिगम के शिक्षण में किसी कठिनाई का अनुभव करते है तो इसे सामान्य कठिनाई कहा जाता है। इस सामान्य कठिनाई के निवारण हेतु समवित उपाय के अन्तर्गत उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। यथा —

(i) — यदि सामान्य कठिनाई विषय विशेष के जिस खेल अथवा प्रकरण से सम्बन्धित है, उसके शिक्षण अधिगम हेतु अतिरिक्त कक्षाए लगाकर शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है।

(ii) शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए अधिगम की अन्य शिक्षण विधियो का उपयोग किया जा सकता है।

(iii) — शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने मे अन्य दृश्य उपकरणो अभ्यास कार्य एवं प्रायोगिक कार्य को अधिक महत्व दिया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

2- उपचारात्मक शिक्षण हेतु विशिष्ट कठिनाइयाँ और उनके निराकरण हेतु उपाय :— यदि निदानात्मक परीक्षण से किसी छात्र में शिक्षण अधिगम के शिक्षण में व्यक्तिगत कठिनाइयां प्रकाश मे आती है तो वे विशिष्ट कठिनाइया कही जाती है। यथा विषय क्षेत्र / प्रकाश से सम्बन्धित पूर्व ज्ञान की कमी अथवा छात्र मे अधिगम क्षमता का अभाव / उक्त विशिष्ट कठिनाइयो के निवारण हेतु वैयक्तिक एवं विशिष्ट उपाय किए

जाते है। छात्र की विषय से सम्बन्धित एवं ज्ञान की कमजोरियो को दूर करने का प्रयास किया जाता है। छात्र की अधिगम क्षमता के विकास के अतिरिक्त शिक्षण उपयुक्त विधियो एवं तकनीको की सहायता से किया जाता है।

3- उपचारात्मक शिक्षण हेतु शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित कठिनाइया एवं निवारण हेतु उपाय :— यदि छात्र के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मे कमी के कारण अधिगम मे कठिनाई आती है तो उसके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए उपचार गृह मे उपचार हेतु भेजा जाता है।

4- उपचारात्मक शिक्षण हेतु अन्य कठिनाइया और उनके निवारण हेतु उपाय :— यदि छात्र मे विषयगत व्यक्तिगत कठिनाइयाँ प्रकाश मे आती है, यथा - समयाभाव के कारण गृहकार्य न कर पाना, घर के अन्य कार्यो मे संलग्न रहने से छात्र द्वारा विषय विशेष को न दोहराना अथवा स्वाध्याय न करना।

इन सब के निवारण के लिए छात्र के अभिभावक से सम्पर्क करके उनका अपेक्षित सहयोग लिया जा सकता है। उन्हे अपने उनके कमजोरियो के अनुरूप उनकी शिक्षा पर अतिरिक्त समय एवं ध्यान देने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

शिक्षण अधिगम में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था (Organization of Remedial teaching in teaching Learning) :—

शिक्षण अधिगम में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था निम्नलिखित प्रकारों से की जा सकती है—

1- कक्षा शिक्षण
2- ट्यूटोरियल शिक्षण
3- स्व-अनुदेशित शिक्षण
4- अनौपचारिक शिक्षण

1- **कक्षा शिक्षण (Class teaching) :—** शिक्षण अधिगम में उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था में कक्षा के वर्तमान स्वरूप और संरचना में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता, यह जानकारी हो जाने पर कि किसी कक्षा के छात्र विषय विशेष की किसी एक शाखा प्रकरण, विषय-वस्तु प्रक्रिया, अवधारणा आदि को समझने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं या जो कुछ भी उन्हें अब पढ़ाया जा रहा है उसके विषय में अपेक्षित पूर्व ज्ञान उसके पास नहीं है, शिक्षक समस्त कक्षा के छात्रों को उसके विषय में पुनः ज्ञान प्रदान करता है। पहले पढ़ाए पाठ को पुनः पढ़ाता है। किसी भी अंश को अच्छी तरह स्पष्ट करता है, उसके विषय में विविध प्रकार के अधिगम अनुभवों को बहु-इंद्रिय माध्यम से प्रस्तुत करता है और ऐसे सभी प्रयत्न अपने शिक्षण के द्वारा करता है, जिनसे कक्षा के समस्त छात्रों को विषय विशेष में अनुभव की जाने वाली अधिगम

कठिनाई कमजोरी तथा परेशानी को दूर करने में पूरी-पूरी सहायता मिल सके इस प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा शिक्षक कक्षा के समस्त छात्रों की एक सदृश अधिगम कठिनाइयों को दूर करने के लिए समन्वित प्रयास कर सकता है।

(2) स्व-अनुदेशित शिक्षण (Auto-Instructional Teaching) :- इस प्रकार की उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था में छात्रों को स्व-अनुदेशन द्वारा ही अपनी कमजोरियों और कठिनाइयों को दूर करने के उपाय करने पड़ते हैं। और उन्हें किसी भी प्रकार का शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता यहाँ जिस प्रकार की विषयगत अधिगम कठिनाइयाँ और कमजोरियाँ निदान की जाती हैं उसके ध्यान में रखते हुए स्व-अनुदेशन सामग्री अभिक्रमित अधिगम पैकेज के रूप में या कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम के रूप में छात्र विशेष को उपलब्ध करा दी जाती है। और फिर वह उस अनुदेशन सामग्री का उपयोग करते हुए स्वयं ही उससे उचित अनुदेशन ग्रहण करते हुए अपनी अधिगम कठिनाइयों तथा कमजोरियों के निवारण के लिए प्रयत्न करता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

(4) अनौपचारिक शिक्षण (Informal Teaching)

विषय विशेष सम्बन्धी अनौपचारिक शिक्षण गतिविधियों को अगर औपचारिक शिक्षण के साथ जोड़ दिया जाए तो जिन छात्रों के लिए उपचारात्मक शिक्षण चाहिए, उनकी बहुत-कुछ अधिगम कठिनाइयों और कमजोरियों का निवारण हो सकता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना, विज्ञान की विविध वस्तुओं का संग्रह करना सामूहिक चर्चा एवं वाद विवाद में भाग लेना, वैज्ञानिक माडल बनाना, विज्ञान पत्रिकाएँ तथा अन्य विभिन्न प्रकार की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भाग लेना आदि विभिन्न अनौपचारिक गतिविधियाँ हैं।

निदानात्मक मूल्यांकन
Diagnostic Evaluation

शिक्षण अधिगम में उपलब्धियों एवं परीक्षा परिणामों में कमजोर छात्रों की जानकारी प्राप्त हो जाती है, परन्तु यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि उनकी कमजोरियों के कारण क्या है अथवा उनकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयाँ क्या है? इस प्रकार की जानकारी करना ही निदान कहलाता है। जैसा कि शिक्षा-शब्दकोश में वर्णित है "निदान उपयुक्त उपचारात्मक अथवा उच्च अधिगम कार्यों को निर्धारित करने के द्वारा उसके अधिगम को सुसाध्य बनाने के उद्देश्य से एक विशेष विषय में आवश्यक कार्यों में पदानुक्रम की उसकी तैयारी को

Scanned with CamScanner

विश्लेषित करके एक छात्र की विद्यमान क्षमताओं को निर्धारित करने की प्रक्रिया है।"

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के शिक्षण अधिगम में जब किसी छात्र को कठिनाई होती है अथवा परीक्षा में सफल नहीं हो पाता है तब यह ज्ञात करना आवश्यक हो जाता है कि छात्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के किस अनुभाग/खण्ड में अधिगम की कठिनाई अनुभव कर रहा है अथवा असफल हो रहा है। रास के अनुसार, "बचाव निदान का उच्चतम स्तर है।"

निदान के स्तर :- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के शिक्षण में निदान के निम्नलिखित स्तर है—

1- **समस्या या कठिनाई ग्रस्त छात्र की पहचान** — सर्वप्रथम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के शिक्षण में समस्या या कठिनाई ग्रस्त छात्रों की पहचान की जाती है।

2- **कठिनाई की प्रकृति :-** तत्पश्चात छात्रों द्वारा कुल त्रुटियों के क्षेत्रों की पहचान की जाती है।

3- **समस्या या कठिनाई का कारण :-** छात्रों द्वारा कुल त्रुटियों के क्षेत्रों की जानकारी हो ~~जाने~~ जाने के उपरान्त उनके कारणों का पता किया जाता है।

4- **उपचार :-** समस्या या कठिनाई के कारण ज्ञात हो जाने के उपरान्त उपचार किया जाता है। चूंकि उपचार के कोई नियम नहीं है, वह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed 1st Year (2019-2021)

निदान की विशेषताएँ

Characteristics of Diagnosis

निदान की विशेषताएँ निम्नलिखित हो सकती है -

1- इसके द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की किसी विशेष समस्या या क्षेत्र में छात्रों की कठिनाई या कमजोरी का पता करने का प्रयास किया जाता है।

2- छात्रों की वांछनीय एवं वास्तविक उपलब्धियों के मध्य दूरी को समाप्त कराने मे सहायता करता है।

3- यह अच्छे निर्देशन, परामर्श एवं शिक्षण हेतु महत्वपूर्ण उपाय सुझाने मे समर्थ है।

निदानात्मक परीक्षण :- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे छात्रो की कठिनाइयों एवं कमजोरियो अथवा त्रुटियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए जिन परीक्षण / परीक्षा का प्रयोग किया जाता है। उसे नैदानिक अथवा निदानात्मक परीक्षण / परीक्षा कहा जाता है।

निदानात्मक परीक्षण विशेष रूप से उपचारात्मक उपायो के लिए आधार के रूप मे छात्रो की विशेष कमजोरियो को सुनिश्चित करने के विचार से एक सीमित विषय क्षेत्र से सम्बन्धित उप-क्षेत्र मे उपलब्धि के मापन के लिए उद्देश्य एक परीक्षा है।"

शिक्षण अधिगम मे निदानात्मक परीक्षण करने के उद्देश्य :- शिक्षण अधिगम मे निदानात्मक परीक्षण करने के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते है।

Scanned with CamScanner

1. छात्रों के शिक्षण अधिगम के किसी क्षेत्र विशेष / प्रकरण के अध्ययन / अधिगम में कठिनाइयों / असमर्थताओं का निदान खोजना /

2 - छात्रों की अधिगम कठिनाइयों के निदान से सम्बन्धित शिक्षकों के अनुदेशनात्मक कार्य में संशोधन कराना /

3 - छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण हेतु उपयुक्त कार्यक्रमों के नियोजन में सहायता करना /

Scanned with CamScanner